Regarding merger of Konkan Railway Corporation Limited with Indian Railways.-laid

श्री रविन्द्र दत्ताराम वायकर (मुम्बई उत्तर-पश्चिम) : 1990 के दशक में स्थापित कोंकण रेलवे एक ऐतिहासिक कदम था, जिसमें भारतीय रेलवे ने 50% और शेष संबंधित राज्यों ने निवेश किया था ।मूल समझौते के अनुसार,10 वर्षों के भीतर KRCL का विलय भारतीय रेलवे में हो जाना चाहिए था,जो तीन दशकों बाद भी नहीं हो पाया है ।आज कोंकण रेलवे अपनी क्षमता का 175% उपयोग कर रहा है ।लेकिन एक अलग कॉरपोरेशन होने के कारण इसे अन्य रेलवे जोन्स की तरह केंद्र से बजटीय सहायता नहीं मिलती । फंड की भारी कमी के कारण 350 किमी ट्रैक का दोहरीकरण और भूस्खलन रोकने जैसे कार्य रुके हुए हैं और नई ट्रेनें चलाना असंभव हो गया है ।केरल, कर्नाटक और गोवा के बाद महाराष्ट्र सरकार ने भी इस विलय को मंजूरी दे दी है ।महाराष्ट्र का केवल एक अनुरोध था कि इस ऐतिहासिक ब्रांड का नाम "कोंकण रेलवे" ही रखा जाए, जिसे केंद्र ने स्वीकार कर लिया है ।अतः मेरा सरकार से अनुरोध है कि चूंकि सभी राज्यों की सहमति मिल चुकी है, इस विलय की प्रक्रिया को तत्काल पूरा किया जाए । इससे कोंकण रेलवे को आवश्यक वित्तीय संसाधन मिल सकेंगे और दोहरीकरण का कार्य शुरू हो सकेगा, जिसका यह क्षेत्र हकदार है ।